Machhli Ke Ajaaibaat (Hindi)

मछली के अ़जाइबात

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मछली के अ़जाइबात

येह रिसाला (**मछली के अ़जाइबात**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मछली के अ़जाइबात

(दिलचस्प सुवालात व जवाबात)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (55 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मसाइल के साथ साथ दिलचस्प मा'लूमात का ज़ख़ीरा हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने येह कहा : ''اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ''[1] उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई । (مُعجَم کبیر ج٥ ص ٢٥ حدیث ٤٤٨٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चन्द अनोखी मछलियां

सुवाल : समुन्दर अ़जाइबात से भरा पड़ा है और मछलियों में भी क़ुदरत के एक से एक करिश्मे हैं, चन्द मछलियों के नाम ब नाम कुछ ह़ालात बयान कर दीजिये ।

जवाब : चन्द मछलियों का तज़्किरा ह़ाज़िर है :

مدینہ

1 : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा और इन्हें क़ियामत के रोज़ अपनी बारगाह में मुक़र्रब मक़ाम अ़ता फ़रमा ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

रअ़आ़दा (बर्क़ मछली)

रअ़आ़दा (बर्क़ मछली) यूं तो येह एक छोटी मछली है मगर इस की ख़ा़सिय्यत येह है कि जब जाल में फंस जाती है तो जाल जिस के हाथ में हो उस का हाथ कांपने लगता है ! तजरिबा कार शिकारी जब इस मछली को फंसा हुवा पाता है तो उस की रस्सी किसी चीज़ से बांध देता है, जब तक वोह मर नहीं जाती रस्सी नहीं खोलता इस लिये कि मरने के बा'द उस की येह ख़ा़सिय्यत ख़त्म हो जाती है। (حَیاۃُ الْحَیَوان لِلدَّمِیری ج۲ ص ٤٠)

कलिमा लिखी हुई मछली

अ़ब्दुर्रह़मान बिन हारून मग़रिबी ने बयान किया है कि मैं एक मर्तबा "बुहै़रए मग़रिब" में किश्ती पर सुवार हुवा, हमारे साथ एक लड़का था उस के पास मछली पकड़ने की डोर और कांटा था। जब हमारी किश्ती मौज़ए बरतून में पहुंची तो उस लड़के ने अपनी डोर दरिया में फेंकी, एक बालिश्त भर मछली कांटे में फंसी लड़के ने जब उसे निकाला तो येह देख कर हमारा ईमान ताज़ा हो गया कि उस मछली के सीधे कान के पीछे لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ और ऊपर की जानिब مُحَمَّد और उस के उलटे कान के पीछे رَسُوْلُ اللہ लिखा हुवा था। (ایضاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

काफ़ी देर तक ज़िन्दा रहने वाली मछलियां

अबू हा़मिद अन-दलुसी की किताब "**तोह़फ़तुल अल्बाब**" में लिखा है कि बुहै़रए रूम में एक ऐसी मछली पाई जाती है जो हाथ भर

की (या'नी तक़्रीबन आध गज़ लम्बी) होती है उसे पकड़ा जाए तो वोह मरती नहीं बल्कि फुदक्ती रहती है और अगर उस का कोई टुकड़ा काट कर आग पर रखा जाए तो वोह टुकड़ा एक दम उछल कर आग से बाहर आ जाता है और बसा अवक़ात आदमी के मुंह पर आ पड़ता है जब इस मछली को पकाना हो तो पतीली के ढक्कन पर लोहा या वज़्नी पथ्थर रख दिया जाए ताकि उस के टुकड़े उछल कर पतीली में से बाहर न निकल पड़ें, जब तक वोह मुकम्मल त़ौर पर पक नहीं जाती मरती नहीं ख़्वाह उस के हज़ार टुकड़े ही क्यूं न कर दिये जाएं। **(حیاۃُ الحَیوان لِلدَّمِیری ج۲ ص۱٤)**

ज़िन्दा जज़ीरा !

मन्क़ूल है : जब सिकन्दर बादशाह की फ़ौज हिन्दूस्तान से बह़री जहाज़ में रवाना हुई तो शाम के वक़्त समुन्दर में एक जज़ीरा (या'नी ख़ुश्की का टुकड़ा जिस के चारों त़रफ़ पानी हो, टापू) नज़र आया, जहाज़ लंगर अन्दाज़ हुवा और लश्कर उस जज़ीरे पर उतर पड़ा। खूंटे वग़ैरा गाड़ने तक तो ख़ैर रही मगर जब उन लोगों ने खाना वग़ैरा पकाने के लिये जा ब जा आग जलाई तो जज़ीरे में एक दम ह़-र-कत पैदा हुई और वोह मुकम्मल त़ौर पर पानी के अन्दर उतर गया जिस से बहुत सारे सिपाही डूब गए ! वोह जज़ीरा दर अस्ल ज़मीन का कोई टुकड़ा न था, हिन्दूस्तान के समुन्दर में पाई जाने वाली देव हैकल मछली **रारकाल** थी ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत से येह **मछली** इस क़दर लम्बी चौड़ी है कि जब सत़्हे समुन्दर पर उभर आती है तो छोटा सा जज़ीरा मा'लूम होती है ! मा'लूम हुवा कि **रारकाल मछली** निहायत सख़्त जान होती है जभी तो उस की खाल में खूंटे गाड़े गए तब भी उस पर कुछ असर न हुवा मगर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

जब आग जलाई गई तो उसे ख़ूब जलन मची और ठन्डक ह़ासिल करने के लिये उस ने पानी में डुबकी लगा दी और ज़िम्नन उस **ज़िन्दा जज़ीरे** पर मौजूद लोग डूब गए। (عجائبُ الحیوانات ص ۲۲۹ بتصرُّف)

ज़ामोर

ज़ामोर एक छोटी सी मछली है। इस मछली को इन्सान की आवाज़ बड़ी भली मा'लूम होती है, इसी लिये किश्ती आती देख कर येह उस के साथ साथ हो लेती है ताकि इन्सानों की आवाज़ सुनती रहे, जब येह किसी **बड़ी मछली** को किश्ती पर ह़म्ला करने के लिये आते देख लेती है तो फ़ौरन फुदक कर उस के कान के अन्दर घुस जाती है और बराबर फड़क्ती रहती है, बड़ी मछली शिद्दते तक्लीफ़ से किश्ती से रुख़ मोड़ कर साह़िल की त़रफ़ लपक्ती है ताकि किसी पथ्थर पर अपना सर मारे, चुनान्चे जब उसे कोई पथ्थर नज़र आता है तो वोह उस पर ज़ोर ज़ोर से अपना सर पटख़्ने लगती है यहां तक कि मर जाती है। **ज़ामोर** की इस ख़ूबी के पेशे नज़र माहीगीर उस से बहुत प्यार करते हैं और उसे खिलाते रहते हैं और अगर कभी **ज़ामोर** जाल में फंस जाए तो उसे छोड़ देते हैं। (حَیاۃُ الحَیَوان ج ۲ ص ٦)

वैल मछली

आज भी ज़िन्दा रहने वाले जानवरों में **वैल मछली** सब से बड़ा जानवर है और वैल मछलियों की एक क़िस्म जो "**ब्लू वैल**" कहलाती है वोह साइज़ और वज़्न के ए'तिबार से वैल मछलियों में सब से बड़ी होती है। एक **ब्लू वैल** ऐसी भी पकड़ी जा चुकी है जो कि 108 फ़ुट लम्बी और 131 टन (या'नी 3668 मन) से ज़ियादा वज़्नी थी ! **ब्लू वैल**

बर्फ़ानी समुन्दरों में रहती है। तैरते हुए इस की रफ़्तार ज़ियादा से ज़ियादा 22.68 मील फ़ी घन्टा होती है और उस वक़्त रफ़्तार की वज्ह से उस की त़ाक़त 520 घोड़ों की त़ाक़त के बराबर होती है। **ब्लू वैल** का बच्चा पैदाइश के वक़्त 25 फ़ुट तक लम्बा और 7 टन (या'नी 196 मन) से ज़ियादा वज़्नी होता है। 1932 सि.ई. में 89 फ़ुट लम्बी और 119 टन (या'नी 3332 मन) वज़्नी एक **ब्लू वैल** मछली पकड़ी गई थी, इस मछली की सिर्फ़ ज़बान का वज़्न तीन टन (या'नी 84 मन) था। (एक टन में 28 मन होते हैं) (عجائبُ الْحَیَوانات ص ٢٣٠ مُلَخَّصاً)

मनारा

येह समुन्दरी मछली है जो पानी में **मनारे** की त़रह़ सीधी खड़ी हो जाती है और फिर किश्तियों पर अपने आप को गिरा कर उन्हें ग़र्क़ कर देती है। जब मल्लाह़ इस की आहट पाते हैं तो नरसिंघा और सिलफ़्ची वग़ैरा बजाते हैं ताकि ख़ौफ़ज़दा हो कर भाग जाए। **मनारा** मछली किश्ती वालों के लिये बहुत बड़ी आफ़त है। (حَیاةُ الحَیَوان ج٢ ص ٤٤٧)

कूक़ी

येह एक अ़जीबो ग़रीब मछली है, इस के सर पर एक बहुत बड़ा **कांटा** होता है। जब भूक लगती है तो जिस (बड़े से बड़े) जानवर को भी अपना शिकार बनाना चाहे उस पर जा गिरती है और वोह जानवर उसे आई रोज़ी समझ कर निगल जाता है और येह अन्दर पहुंच कर अपने **कांटे** से उस का पेट चीर कर बाहर आ जाती है ! और यूं अपना शिकार करने वाले जानवर को ख़ुद शिकार कर लेती और फिर उसे मज़े से खाने

लगती है। उस के शिकार का बचा खुचा दूसरे दरियाई जानवर भी खाते हैं। जब माहीगीर **कूक़ी मछली** का शिकार करने की कोशिश करते हैं तो अपने कांटे से ह़म्ला कर के किश्ती फाड़ देती और डूबते हुए माहीगीरों को हड़प कर जाती है ! **कूक़ी** का शिकार करने वाले इसी मछली की खाल अपनी किश्ती पर चढ़ा लेते हैं क्यूं कि इस की अपनी खाल पर इस का **कांटा** असर नहीं करता ! **(اَیضاً ص٣٦٣)**

क़ात़ूस

क़ात़ूस बहुत बड़ी मछली है, बड़ी बड़ी किश्तियों को तोड़ फोड़ डालती है। **क़ात़ूस मछली** में एक अ़जीब बात येह है कि अगर किसी किश्ती में ह़ैज़ वाली औ़रत सुवार हो तो उस किश्ती के क़रीब भी नहीं जाती ! मल्लाह़ (या'नी किश्ती चलाने वाले) **क़ात़ूस मछली** को ख़ूब जानते हैं, अगर कहीं इस का सामना हो जाए तो उस के सामने औ़रत के ह़ैज़ से आलूद कपड़े फेंकते हैं जिस से येह भाग जाती है। **(عجائبُ الْحَیوانات ص٢٢٠ مُلَخَّصاً)**

दुल्फ़ीन (सोस मछली)

दुल्फ़ीन बहुत ही प्यारी मछली है, किश्ती वाले इसे देख कर बेह़द ख़ुश होते हैं। **दुल्फ़ीन** मछली अगर किसी इन्सान को डूबते हुए देख ले तो फ़ौरन उस की मदद को पहुंच जाती है और उसे धकेलती हुई कनारे की त़रफ़ ले जाती है, बा'ज़ अवक़ात डूबते आदमी के नीचे हो कर उसे अपनी पीठ पर सुवार कर लेती है और बा'ज़ अवक़ात अपनी दुम से उसे साह़िल की त़रफ़ ले आती है। **(ایضاً ص٢٢١)** **दुल्फ़ीन** मछली मिस्र के दरियाए नील में पाई जाती है।

परों वाली मछली

समुन्दर में एक बहुत बड़ी मछली ऐसी भी है जो अगर कभी इत्तिफ़ाक़ से कम गहरे पानी में आ जाए और पानी वहां से ख़ुश्क हो जाए तो वोह कीचड़ में तड़पने लगती है और मु-तवातिर सात घन्टे तक तड़पती रहती है, इस इज़्तिराब (या'नी बे क़रारी) से उस की खाल फट जाती है और नीचे से **दो बड़े बड़े पर** निकल आते हैं जिन से उड़ कर वोह फिर समुन्दर में चली जाती है । **(ایضاً ص ۲۲۲)**

मिन्शार

"बुहै़रए अस्वद" में पहाड़ जैसी एक क़वी हैकल मछली पाई जाती है जिस का नाम **मिन्शार** है, इस की पीठ पर सर से ले कर दुम तक आबनूस[1] की त़रह़ काले काले और आरे के दन्दाने जैसे बड़े बड़े कांटे होते हैं, इस का एक दन्दाना दो हाथ या'नी तक़रीबन एक मीटर के बराबर होता है, सर के दाएं बाएं तक़रीबन पांच पांच मीटर लम्बे **दो कांटे** होते हैं । अपने दोनों कांटों से समुन्दर का पानी चीरती हुई चली जाती है जिस से ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनाई देती है । अपने मुंह और नाक से पानी की पिचकारी निकालती है जो आस्मान की त़रफ़ फ़व्वारे की शक्ल में नज़र आता है । फिर उस के क़त़रे किश्ती वग़ैरा पर बारिश के क़त़रों की त़रह़ गिरते हैं येह मछली अगर किसी किश्ती के नीचे पहुंच जाए तो उसे तोड़ फोड़ डालती है । जब किश्ती वाले उसे देखते हैं तो ख़ौफ़ज़दा हो जाते हैं और उस से ह़िफ़ाज़त के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़गिड़ा कर दुआएं मांगते हैं । **(حیاۃ الحیوان ج۲ ص۴۴۸)**

मदीना

1 : आबनूस : जनूब मशरिक़ी एशिया के एक दरख़्त का नाम है जिस की लकड़ी सख़्त, वज़्नी और सियाह होती है ।

कौसज

कौसज मछली जिसे "समुन्दरी शेर" कहते हैं, इस की सूंड आरे की त़रह़ होती है, कभी इन्सान को पा लेती है तो दो टुकड़े कर के चबा जाती है, पानी में जानवरों को भी अपने आरे से इस त़रह़ काट डालती है जिस त़रह़ तलवार किसी चीज़ को काट देती है। **कौसज** के दांत इन्सान के दांतों जैसे होते हैं, समुन्दरी जानवर इस से ख़ौफ़ज़दा हो कर दूर भागते हैं, **कौसज** की अ़जीब बात येह है कि अगर रात के वक़्त इस को शिकार कर लें तो इस के पेट से ख़ुश्बूदार चरबी निकलती है, अगर दिन में शिकार करें तो नहीं निकलती ! बसरा शरीफ़ के दरियाए दिजला में ख़ास मौसिम के अन्दर इस की ब कसरत पैदावार होती है। (ایضاً ص٤٢٥ مُلَخَّصاً)

ग़ाफ़िल मछली ही जाल में फंसती है

सुवाल : क्या **मछली** के जाल में फंसने का भी कोई सबब है ?

जवाब : बा'ज़ रिवायात से पता चलता है कि वोही **मछली** माहीगीर के कांटे या जाल में फंसती है जो **ज़िक्रुल्लाह** से ग़ाफ़िल हो जाती है चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 9 सफ़ह़ा 760 पर फ़रमाते हैं : अबुश्शैख़ ने रिवायत की : مَا اُخِذَ طَائِرٌ وَّلَا حُوْتٌ اِلَّا بِتَضْيِيْعِ التَّسْبِيْحِ या'नी "कोई परिन्दा और **मछली** नहीं पकड़ी जाती मगर तस्बीह़े इलाही छोड़ देने

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

से ।" (تفسیر دُرِّمَنْثور ج٤ ص ١٨٤) **मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** सफ़्ह़ा 531 पर है : अहले कश्फ़ फ़रमाते हैं : "तमाम जानवर तस्बीह़ (या'नी **अल्लाह तआ़ला** की पाकी बयान) करते हैं, जब तस्बीह़ छोड़ देते हैं उसी वक़्त उन को मौत आती है । हर पत्ता तस्बीह़ करता है, जिस वक़्त तस्बीह़ से ग़फ़्लत करता है उसी वक़्त दरख़्त से जुदा हो कर गिर पड़ता है ।"

म-दनी मुन्नी और ग़ाफ़िल मछलियां

इस सिल्सिले में एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत मुला-ह़ज़ा हो, मुल्के **यमन** में एक शख़्स दरिया के कनारे मछलियां पकड़ रहा था, उस की **बच्ची** भी पास ही बैठी थी, जब भी कोई **मछली** हाथ आती वोह उसे पीछे रखी हुई टोकरी में डाल देता, बच्ची **मछली** उठा कर दोबारा पानी में डाल देती । जब वोह शख़्स शिकार से फ़ारिग़ हुवा और मुड़ कर देखा तो टोकरी में एक भी **मछली** न थी ! अपनी बेटी से पूछा : मछलियां कहां गईं ? उस ने जवाब दिया : प्यारे अब्बू ! आप ही ने तो बताया था कि ह़दीसे पाक में है : "जाल में वोही **मछली** फंसती है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **ज़िक्र** से ग़ाफ़िल हो जाती है ।" लिहाज़ा मुझे अच्छा नहीं लगा कि हम वोह **मछली** खाएं जो **ज़िक्रुल्लाह** से ग़ाफ़िल हो गई । अपनी बच्ची की ज़बान से ऐसी पुर ह़िक्मत बात सुन कर उस शख़्स पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और वोह रोने लगा और उस ने **मछली** पकड़ने का कांटा फेंक दिया ।

(صفۃُ الصّفوۃ ج٤ ص ٣٥٧ مُلَخَّصاً)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

اُذْکُرُوا اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ग़ाफ़िल मछलियां खाना कैसा ?

सुवाल : तो क्या "ग़ाफ़िल मछलियां" नहीं खानी चाहिएं ?

जवाब : ऐसा नहीं है, मछलियां खाना **ह़लाल** है।

कौन कौन सा आबी जानवर ह़लाल है ?

सुवाल : पानी का कौन कौन सा जानवर ह़लाल है ?

जवाब : मछली के इ़लावा पानी का हर जानवर ह़राम है जैसा कि फ़ु-क़हाए अह़नाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "पानी के हर जानवर का खाना ह़राम है सिवाए मछली के कि इस का खाना ह़लाल है।" (عالمگیری ج٥ ص ٢٨٩) **इमाम बुरहानुद्दीन मरग़ीनानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی फ़रमाते हैं : "पानी का कोई जानवर नहीं खाया जाएगा सिवाए **मछली** के, यहां तक कि बहुत छोटी मछली, सांप नुमा मछली और मछली की दीगर अक़्साम भी खा सकते हैं।" (ھدایہ ج٤ ص٣٥٣)

मछली की ता'रीफ़

सुवाल : मछली की ता'रीफ़ बता दीजिये।

जवाब : दा'वते इस्लामी के दारुल इफ़्ता के एक मुफ़्ती साह़िब की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

मा'लूमाती तह़क़ीक़ क़दरे अल्फ़ाज़ के तसर्रुफ़ के साथ पेश की जाती है। **मछली** की कोई ह़त्मी (FINAL) ता'रीफ़ तो फ़िक़्ह या लुग़त की कुतुब में नज़र से नहीं गुज़री क़दीम (या'नी पुराने) और जदीद (या'नी नए) माहिरीन ने इस के मु-तअ़ल्लिक़ जो बातें बयान की हैं उन का ख़ुलासा येह है कि **मछली** ठन्डे ख़ून वाला आबी (या'नी पानी का) जानवर है, इस का शुमार उन ह़ैवानात में होता है जो फ़िक़ारिया (Vertebrate) या'नी रीढ़ की हड्डी वाले जानवर हैं, लेकिन बहुत सारी मछलियां ऐसी हैं जिन में रीढ़ की हड्डी नहीं होती। सांस लेने के लिये अक्सर मछलियां गलफड़े इस्ति'माल करती हैं। अक्सर मछलियां अन्डे देती हैं लेकिन बा'ज़ बच्चे भी जनती हैं, कुछ मछलियां ऐसी हैं जो पानी पर मुख़्तसर उड़ान भी करती हैं।

मछली के सिवा हर आबी जानवर ह़राम है

फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूर किताब "**बदाइउ़स्सनाएअ़**" में है : "**मछली** के सिवा पानी के तमाम जानवर ह़राम हैं, **मछली** ह़लाल है सिवाए उस मछली के जो ख़ुद मर कर पानी की सत़ह़ पर उलट गई हो। येही हमारे अस्ह़ाब का क़ौल है, **मछली** की तमाम अक़्साम ह़लाल होने में बराबर हैं चाहे वोह **जिर्रीस** हो या मारमाही (जो कि सांप से मिलती जुलती होती है, इसे "बाम मछली" भी बोलते हैं वोह) हो या इस के इ़लावा कोई क़िस्म, क्यूं कि हम ने **मछली** के ह़लाल होने पर जो दलाइल ज़िक्र किये हैं उन में ऐसी कोई तफ़्सील नहीं कि येह मछली ह़लाल है या वोह मछली, सिवाए उस के जिस की दलील के ज़रीए तख़्सीस की गई (या'नी मख़्सूस कर लिया गया) हो।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم और इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से **जिर्रीस** और नर मछली की इबाह़त (या'नी जाइज़ होना) मरवी है जब कि किसी और से इस का ख़िलाफ़ मन्क़ूल नहीं है तो येह इज्माअ़ हो गया।" (بَدائعُ الصَّنائِع ج٤ص١٤٦، مُلَخَّصاً)

मछली की हज़ारों क़िस्में हैं

"**बदाइउ़स्सनाएअ़**" की इ़बारत से वाज़ेह़ हुवा कि मछली की तमाम ही अक़्साम ह़लाल हैं हां इतना ज़रूर है कि मछली की सेंकड़ों बल्कि हज़ारों अक़्साम हैं बा'ज़ अक़्साम ऐसी हैं कि जिन में उ़-लमा को सरा-ह़तें करना पड़ीं कि येह जानवर मछली है इस को ग़ैर मछली कहना दुरुस्त नहीं। बा'ज़ जानवर वोह हैं कि जिन के मछली होने या न होने में अहले लुग़त को इख़्तिलाफ़ रहा जैसा कि **झींगा** इस के मछली होने या न होने में इख़्तिलाफ़ है लेकिन दुरुस्त येही है कि येह मछली है। इस बारे में ह़त्मी ज़ाबित़ा येह है कि लुग़त और अहले अ़रब के उ़र्फ़ का ए'तिबार मो'तबर होगा कि अ़-रबी में जिस को **समक** (या'नी मछली) कहते हैं अह़ादीस में इस को ह़लाल किया गया है और इस लफ़्ज़ के दुरुस्त मह़मल का तअ़य्युन अहले अ़रब साह़िबाने लुग़त का उ़र्फ़ ही कर सकता है। अलबत्ता जिस चीज़ के बारे में मु-तअ़य्यन (या'नी तै) हो जाए कि येह मछली है तो उस का खाना ह़लाल है, चाहे उस के लिये समक के इ़लावा कोई और लफ़्ज़ म-सलन **ह़ूत** और **नून** वग़ैरा इस्ति'माल किया गया हो।

समुन्दरी अ़जाइबात अनगिनत हैं

मछली की बहुत सारी अक़्साम वोह हैं जिन के बारे में शुरूअ़

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

ही से लोगों में तरद्दुद (या'नी तअ़ज्जुब, शक व शुबा) रहा कि येह मछली है भी या नहीं ! बा'ज़ अक़्साम तो अ़क़्लों को ह़ैरान कर देने वाली हैं, समुन्दर के बारे में चूंकि कहा जाता है : ''اَلْبَحْرُ لَا تُحْصٰی عَجَائِبُهٗ'' या'नी समुन्दरी अ़जाइबात शुमार में नहीं आ सकते। येही वज्ह है कि समुन्दर से नित नई मख़्लूक़ात की दरयाफ़्त के साथ साथ मछलियों की भी अ़जीब से अ़जीब तरीन अक़्साम की फ़राहमी का सिल्सिला जारी व सारी है। लिहाज़ा बा'ज़ मछलियों से मु-तअ़ल्लिक़ येह बात हर दौर के उ़-लमा में ज़ेरे बह़्स रही है कि येह चीज़ मछली है या नहीं।

दो मछलियों के मु-तअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तह़क़ीक़े अनीक़

फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जिल्द 20 सफ़ह़ा 323 ता 326 पर इसी त़रह़ की **दो मछलियों** पर उ़म्दा तह़क़ीक़ बयान की गई है, एक मछली का नाम **जिर्रीस** और दूसरी का नाम अ़-रबी में **जिर्री** फ़ारसी में **मारमाही** और उर्दू में **बाम** मछली है येह दोनों मछली अपनी शक्ल में ऐसी हैं कि इन के मछली होने या न होने में न सिर्फ़ येह कि अ़वाम में तरद्दुद या'नी शक व शुबा रहा बल्कि बा'ज़ फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के भी इस त़रह़ के अक़्वाल कुतुब में नक़्ल हुए जिन के मुत़ाबिक़ मछली न मानने की बिना पर उन का खाना जाइज़ नहीं था लेकिन आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की जो तह़क़ीक़ इस मक़ाम पर नक़्ल की है उस में येह साबित किया है कि येह दोनों मछलियां हैं और ह़लाल हैं, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह भी बयान किया कि अहले लुग़त इन दोनों मछलियों को एक ही

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

समझते हैं लेकिन फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक येह दोनों अलग अलग मछलियां हैं। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **जिर्रीस** मछली के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "**जिर्रीस** एक कसीरुल वुजूद मछली सवाहि़ल (समुन्दर के कनारों) पर अरज़ानी (या'नी कसरत) से बिकने वाली है।

हि़कायत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "**मब्सूत़**" में रिवायत फ़रमाते हैं : या'नी अ़म्रह बिन्ते अबी तुबैख़ ने कहा : मैं अपनी कनीज़ के साथ जा कर एक **जिर्रीस** एक क़फ़ीज़ गेहूं को (या'नी तक़रीबन 46 किलो ग्राम गेहूं के बदले) ख़रीद कर लाई जो ज़म्बील (या'नी टोकरी) में न समाई, एक त़रफ़ से सर निकला रहा दूसरी त़रफ़ से दुम, इतने में मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का गुज़र हुवा, फ़रमाया : कितने को ली ? मैं ने क़ीमत अ़र्ज़ की। फ़रमाया : "क्या (ही) पाकीज़ा चीज़ है और कितनी अरज़ां (या'नी सस्ती) और मु-तअ़ल्लिक़ीन पर कितनी वुस्अ़त वाली।"

जिर्रीस के मु-तअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : "ह़यातुल ह़-यवान" में है : **जिर्रीस** येह मछली है जो सांप के मुशाबेह (या'नी मिलती जुलती) है इस की जम्अ़ जरासी है, इस को **जिर्री** भी कहते हैं, फ़ारसी में इसे मारमाही कहते हैं, और हम्ज़ा की बह़्स में गुज़रा कि येह अन्कलैस है। जाहि़ज़ ने कहा : येह पानी का सांप है इस का येह हुक्म है कि वोह ह़लाल है। मगर फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام जिसे **जिर्रीस** कहते हैं वोह यक़ीनन "मारमाही" (या'नी बाम मछली) के सिवा दूसरी मछली है कि मुतून व शुरूह़ व फ़तावा में तसरीह़न (या'नी वाज़ेह़ त़ौर पर)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

दोनों का नाम जुदा जुदा ज़िक्र फ़रमाया, ला जरम (या'नी बेशक) "मुग़रिब" में कहा : هُوَ غَيْرُ الْمَارمَاهِى[1] (या'नी वोह मारमाही का ग़ैर है। ت) अ़ल्लामा इब्ने कमाल बाशा "इस्लाह़ व ईज़ाह़" में फ़रमाते हैं : **जिरींस** मछली की क़िस्म है जो मारमाही या'नी बाम मछली के इ़लावा है। "येह मुग़रिब" (नामी किताब) में मज़्कूर है। इन दोनों को अ़ला-ह़दा इस लिये ज़िक्र किया कि इन के मछली होने में ख़फ़ा (या'नी पोशी-दगी) है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 324, 330)

नर और मादा मछली में चन्द नुमायां फ़र्क़

सुवाल : इस जवाब में "नर मछली" का तज़्किरा किया गया है। बराहे करम ! नर और मादा मछली की शनाख़्त की कुछ वज़ाह़त कर दीजिये।

जवाब : नर और मादा मछली के तीन नुमायां फ़र्क़ मुला-ह़ज़ा हों : ﴾1﴿ आ़म ह़ालात में **नर मछली** का जिस्म लम्बा और बड़ा होता है जब कि **मादा मछली** का जिस्म क़दरे (या'नी कुछ) गोल और नर मछली से निस्बतन छोटा होता है अलबत्ता "नस्ल बढ़ाने" के दिनों में मादा मछली का पेट नर मछली से बड़ा हो जाता है ﴾2﴿ नर मछली का रंग वाज़ेह़ और साफ़ होता है जो अक्सर नीला (Blue) और नारंगी (Orange) होता है जब कि मादा मछली की रंगत भूरी (Brown) होती है ﴾3﴿ नर मछली के पेट के नीचे एक पर (Fin) होता है जो मादा मछली के मुक़ाबले में बड़ा होता है, उस पर (Fin) के नीचे नर या मादा होने की अ़लामात होती हैं।

[1] اَلْمُغْرِب لِلْمُطَرِّزِی ج۱ص۱۳۸

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

बिग़ैर गलफड़े की मछली खाना कैसा ?

सुवाल : बिग़ैर गलफड़े की मछली ह़लाल है या ह़राम ?

जवाब : ह़लाल है।

मछली की कौन सी क़िस्म ह़राम है ?

सुवाल : क्या मछली की कोई क़िस्म **ह़राम** भी है ?

जवाब : नहीं ऐसी कोई क़िस्म नहीं, सिर्फ़ वोह मछली ह़राम है जो दरिया में ख़ुद ब ख़ुद मर कर उलट जाए। हां ! अगर किसी केमीकल या हथियार वग़ैरा की ज़र्ब से पानी ही में मर कर उलट गई तब भी ह़लाल है जैसा कि **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जो मछली पानी में मर कर तैर गई या'नी जो बिग़ैर मारे अपने आप मर कर पानी की सत़्ह़ पर उलट गई वोह ह़राम है, मछली को मारा और वोह मर कर उलटी तैरने लगी, येह ह़राम नहीं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 324)

मछली के ह़लाल होने की दीगर सूरतें

बहारे शरीअ़त में है : "पानी की गर्मी या सर्दी से मछली मर गई या मछली को डोरे में बांध कर पानी में डाल दिया और मर गई या जाल में फंस कर मर गई या पानी में कोई ऐसी चीज़ डाल दी जिस से मछलियां मर गईं और येह मा'लूम है कि उस चीज़ के डालने से मरीं या घड़े या गढ़े में मछली पकड़ कर डाल दी और उस में पानी थोड़ा था इस वज्ह से या जगह की तंगी की वज्ह से मर गई इन सब सूरतों में वोह मरी

हुई मछली **ह़लाल** है।" (ऐज़न, (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج۹، ص ۵۱۲) अल ग़रज़ सिर्फ़ वोही मछली ह़राम है जो बिग़ैर किसी ज़ाहिरी सबब के पानी में त़ब्ई मौत (या'नी खुद ब खुद) मर कर उलटी तैर जाए।

परिन्दे की चोंच से मछली छूट कर गिरी......

सुवाल : परिन्दा मछली का शिकार कर के उड़ा, मछली उस से छूट कर गिरी, देखा तो मरी हुई थी, खाई जाएगी या नहीं ?

जवाब : खाई जाएगी क्यूं कि मौत का सबब परिन्दा बना, त़ब्ई मौत नहीं मरी।

मछली के पेट से अगर मछली निकले तो ?

सुवाल : बड़ी मछली ख़रीद कर जब काटी तो उस के पेट में से छोटी मछली निकली, पेट से निकली हुई मछली खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : पेट से निकली हुई मछली में अगर मा'मूल के मुत़ाबिक़ सख़्ती मौजूद है (या'नी FRESH) है तो उसे भी खा सकते हैं और अगर उस में तग़य्युर आ चुका है या'नी नर्म पड़ कर सख़्त बदबूदार हो चुकी है तो नहीं खा सकते। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं, "मुह़ीत़े बुरहानी" में है : "मछली का शिकार किया और उस के पेट में दूसरी मछली निकली तो उसे भी खाया जाए क्यूं कि येह पहली मछली के पकड़ने और दूसरी जगह की तंगी (या'नी पेट के अन्दर दम घुट जाने) की वज्ह से मरी है। और येह मस्अला दलालत करता है कि अगर त़ाफ़ी मछली के पेट में से दूसरी (फ़्रेश) मछली पाई गई तो वोह खाई जाएगी और अगर वोह

भी त़ाफ़ी हो तो नहीं खाई जाएगी, और इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि उस मछली के बारे में जो कुत्ते के पेट से (क़ै में) निकले कि उस के खाने में कोई ह़रज नहीं जब कि उस की ह़ालत मु–तग़य्यर (या'नी तब्दील शुदा) न हो क्यूं कि उस की मौत "सबब" से हुई है।" (محیط برہانی ج۲ ص۴٤٩)

(**त़ाफ़ी :** उस मछली को कहते हैं जो बिग़ैर किसी ज़ाहिरी सबब के ख़ुद ब ख़ुद मर कर दरिया में उलटी तैर जाए)

मछली के अन्डे

सुवाल : मछली के अन्डे खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : खा सकते हैं। बड़े साइज़ के अन्डे भी होते हैं मगर हज़ारों लाखों की ता'दाद में ख़श्ख़ाश के दानों की त़रह़ बारीक पीले रंग के **अन्डे** जिन पर क़ुदरती झिल्ली चढ़ी हुई होती है वोह काफ़ी लज़ीज़ होते हैं, इस को "आनी" भी बोलते हैं, जब कभी आप अपनी मछली कटवाएं तो काटने वाले को बोल दीजिये कि अगर अन्डे निकलें तो हमें दे दें, क्यूं कि उ़मूमन उजरत पर मछली काटने वाले मछली के अन्डे आलाइशों के साथ डाल देते हैं, फिर निकाल कर बेचते हैं, उन को भी चाहिये कि ऐसा न किया करें, जिस की मछली है उसे दे दिया करें।

पानी में केमीकल के ज़रीए मछलियां मारना कैसा ?

सुवाल : नह्‌र और तालाब में केमीकल डाल कर या करन्ट छोड़ कर मछलियां मार कर शिकार करना कैसा ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

जवाब : केमीकल डालने या करन्ट छोड़ने के त़रीके़ शर-ई ए'तिबार से जाइज़ नहीं कि इस से मछलियों के साथ साथ दीगर ग़ैर मूज़ी आबी मख़्लूक़ भी बिला वज्ह हलाक होगी।

केमीकल से मारी हुई मछलियां खाना कैसा ?

सुवाल : बम या केमीकल के ज़रीए़ मारी हुई मछलियां खाने की इजाज़त है या नहीं ?

जवाब : अगर उन में ज़हरीला असर वग़ैरा न हो तो खाना बिला शुबा जाइज़ है।

बम धमाके से मछलियां मारना कैसा ?

मछली के बारे में "फ़ैसला फ़िक़्ही बोर्ड, देहली" (16 जुमादल ऊला 1424 हि. मुत़ाबिक़ 17-7-2003) का मन्ज़ूर शुदा एक सुवाल और उस का जवाब पढ़िये और मा'लूमात में इज़ाफ़ा कीजिये :

सुवाल : मछलियां पकड़ने के लिये एक बम फोड़ा जाता है जिस से मछलियां पानी में ही मर जाती हैं फिर उन्हें पकड़ कर बाज़ार में लाया जाता है, हमें इ़ल्म नहीं है कि येह मछली पानी में मरी या पानी के बाहर ! ऐसी सूरत में इन मछलियों का खाना जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : ﴾1﴿ बम धमाके से मरी हुई मछलियों को खाना जाइज़ है (क्यूं) कि उस की मौत का सबबे ज़ाहिर (या'नी ज़ाहिरी वज्ह) मा'लूम है। ह़राम सिर्फ़ वोह मछली होती है जिस के मरने का कोई सबबे ज़ाहिर (या'नी ज़ाहिरी सबब) न मा'लूम हो, न ही कोई अ़लामत सबबे मौत पर दाल्ल (सुबूत बनता) हो या'नी येह मु-तअ़य्यन

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

(या'नी क़रार पा चुका) हो कि वोह अपनी मौत आप मर कर उलट गई है। हां अगर बम फोड़ने से मछली में कोई सम्मिय्यत (या'नी ज़हरीला पन) या मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) कैफ़िय्यत पैदा हो तो इस के बाइ़स उस का खाना मम्नूअ़ होगा। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم

﴾2﴿ बम धमाके से अगर दूसरे ग़ैर मूज़ी (या'नी ईज़ा न देने वाले) जानवर न मरें न उन्हें ईज़ा पहुंचे तो शिकार का येह त़रीक़ा जाइज़ वरना उन (ग़ैर मूज़ी जानवरों) के क़त्ल व ईज़ा से मन्फ़अ़त वाबस्ता (या'नी इन को मारने या तक्लीफ़ पहुंचाने से फ़ाएदा) न होने की वज्ह से (शिकार का येह त़रीक़ा) **ना जाइज़** है कि येह ग़ैर मूज़ी जानवरों पर ज़ुल्म है। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم

जाल में ग़ैर मूज़ी जानवर फंस जाएं तो ?

सुवाल : जाल में मछली के साथ साथ ग़ैर मूज़ी जानवर म-सलन केकड़े वग़ैरा भी फंस जाते हैं क्या उन को मरने दिया जाए ?

जवाब : इस सिल्सिले में जामिआ़ अशरफ़िया मुबारक पूर शरीफ़ (अल हिन्द) के दारुल इफ़्ता का फ़तवा येह है : जाल से मछली का शिकार करना जाइज़ है, अगर जाल में मछली के इ़लावा दूसरे ग़ैर मूज़ी जानवर फंस जाएं तो उन्हें जाल से निकाल कर दरिया में डाल दें, क्यूं कि उन्हें बिला वज्हे शर-ई मारना जाइज़ नहीं। ह़दीस में है हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने चिड़िया या किसी जानवर को नाह़क़ क़त्ल किया उस से **अल्लाह तआ़ला** क़ियामत के दिन सुवाल करेगा। अ़र्ज़ किया गया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ! उस का ह़क़ क्या है ? फ़रमाया कि : "उस का

ह़क़ येह है कि ज़ब्ह़ करे और खाए येह नहीं कि सर काटे और फेंक दे।" (مسند امام احمد بن حنبل ج۲ ص ۵٦۷ حدیث۲٦۵٦۲، نَسائی ص ۷۷۰ حدیث۴۳۵۵)

मछली की हड्डियां खा सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : मछली की हड्डियां खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : खा सकते हैं। मछली की हड्डियां उ़मूमन सख़्त होती हैं और खाई नहीं जातीं। मगर बा'ज़ की चबनी या'नी कुरकुरी और मुलायम होती हैं। म-सलन समुन्दर के पापलेट और सुरमई मछली वग़ैरा की हड्डियां नर्म और लज़ीज़ होती हैं इन को ख़ूब चबाइये और अच्छी त़रह़ चूस कर बचा हुवा चूरा फेंक दीजिये। फ़तावा र-ज़विय्या में है : "जानवर ह़लाल मज़्बूह़ की हड्डी किसी क़िस्म की मन्अ़ नहीं जब तक उस के खाने में मज़र्रत (या'नी नुक़्सान) न हो, अगर हो तो ज़रर की वज्ह से मुमा-न-अ़त होगी, न कि इस लिये कि हड्डी ख़ुद मम्नूअ़ है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 340)

मछली की खाल खाना कैसा ?

सुवाल : मछली की खाल खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : खा सकते हैं। उ़मूमन लोग मछली की खाल पहले ही से या पकने के बा'द निकाल कर फेंक देते हैं ऐसा न किया जाए, अगर कोई मजबूरी न हो तो मछली की खाल भी खा लेनी चाहिये, कि येह भी **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की ने'मत है और बा'ज़ मछलियों की खाल तो निहायत लज़ीज़ होती है। हां किसी मछली की खाल सख़्त और चबाने में न आती हो तो फेंकने में ह़रज नहीं।

मछली पकाने का त़रीक़ा

सुवाल : क्या मछली पकाने का कोई मख़्सूस त़रीक़ा है ?

जवाब : मछली पकाने के कई त़रीक़े हैं : सब से बेहतर येह है कि नमक मसाला चढ़ा कर कोएलों पर सेंक ली जाए, ओवन (OVEN) में भी सेंक सकते हैं। बहुत ज़ियादा पका कर या तेज़ आंच पर तल कर खाने से इस के फ़ाएदे में कमी आ जाती है। हमारे (या'नी सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ के) घर में **मछली पकाने का त़रीक़ा** येह है कि पहले चन्द घन्टे पानी के बरतन में भिगो कर रख देते हैं, इस त़रह़ करने से इस की बू में काफ़ी कमी आ जाती है। सालन बनाने में तेल के इ़लावा सिर्फ़ चार चीज़ें या'नी नमक, मिर्च, पिसा हुवा लह्सन और पिसा हुवा ख़ुश्क धनिया इस्ति'माल करते हैं, इस त़रह़ अगर "फ्राई पेन" में जला कर मसाला ख़ुश्क कर लें तो मछली की निहायत लज़ीज़ डिश बन जाती है। मसाला बिग़ैर ख़ुश्क किये भी खा सकते हैं और ह़स्बे ज़रूरत पानी डाल कर शोरबा भी बनाया जा सकता है। तह़रीर कर्दा के इ़लावा हमारे यहां मछली पकाने में उ़मूमन और कोई चीज़ म-सलन पियाज़, आलू, काली मिर्च वग़ैरा नहीं डालते। हां बुम्ला नामी एक नर्म मछली आती है उस में देखा है मज़्कूरा मसाले के इ़लावा टमाटर भी डालते हैं। अगर मसाला या शोरबा ज़ियादा करना हो तो पिसा हुवा लह्सन और ख़ुश्क धनिया दुगनी तिगनी बल्कि इस से भी ज़ियादा मिक़्दार में दिल खोल कर डाल सकते हैं। कभी तजरिबा कर के देख लीजिये, हो सकता है शुरूअ़ात में सह़ीह़ न बन पाए,

जब हाथ बैठ जाएगा तो शायद आप को इस त़रीके़ का मछली का सालन बहुत पसन्द आएगा।

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मछली खाई

सुवाल : क्या सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मछली खाना साबित है ?

जवाब : जी हां।

क़द-आवर मछली

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें कुफ़्फ़ारे कुरैश के मुक़ाबले पर भेजा और ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उ़बैदा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को हमारा सिपह सालार (या'नी कमान्डर) मुक़र्रर फ़रमाया और हमें खजूरों की एक बोरी बत़ौरे ज़ादे राह इनायत फ़रमाई। इस के सिवा कोई और चीज़ नहीं थी जो हमें देते, ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उ़बैदा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हमें (रोज़ाना) एक एक **खजूर** अ़त़ा फ़रमाते। कहा गया : आप ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم एक खजूर से कैसे गुज़ारा करते थे ? फ़रमाया : हम उस को बच्चे की त़रह़ चूसते और ऊपर से पानी पी लेते तो वोह उस रोज़ रात तक हमें काफ़ी हो जाती। हम अपनी लाठियों से दरख़्त के पत्ते गिराते और उन्हें पानी में भिगो कर खा लेते। इस के बा'द हम साह़िले समुन्दर पर पहुंचे तो वहां बड़े टीले के मानिन्द एक बहुत बड़ी मछली पड़ी थी, जिसे **अ़म्बर** कहा जाता है, ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उ़बैदा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : येह

मुर्दार है, फिर खुद ही फ़रमाया : नहीं बल्कि हम **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भेजे हुए हैं और हम राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में (घरों से निकले) हैं और आप ह़ज़रात इज़्तिरारी ह़ालत में हैं इस लिये (इसे) खा लीजिये। हम ने एक महीना उस पर गुज़ारा किया और हम 300 (आदमी) थे ह़त्ता कि हम फ़र्बेह (या'नी तगड़े) हो गए। मुझे याद है कि हम उस की **आंख के गढ़े** से मटके भर भर कर चरबी निकालते और उस (मछली) से **बैल** जितने बड़े बड़े टुकड़े काटते। (उस मछली की आंख का ह़ल्क़ा इतना बड़ा था कि) ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उ़बैदा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हम में से **तेरह आदमियों** को उस की आंख के गढ़े में बिठा दिया (तो सब समा गए)। उस की एक **पसली** (कमान की त़रह़) खड़ी की फिर एक **बड़े ऊंट** पर कजावा कसा और वोह उस (पसली की कमान) के नीचे से गुज़र गया और हम ने उस के खुश्क गोश्त के टुकड़े बत़ौरे ज़ादे राह साथ रख लिये। जब हम **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا पहुंचे तो मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए और इस का ज़िक्र किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह रिज़्क़ था जो **अल्लाह तआला** ने तुम्हारे लिये पैदा फ़रमाया, क्या तुम्हारे पास उस गोश्त में से कुछ है ? (अगर हो तो) हमें भी खिलाओ। हम ने हुज़ूर रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में उस मछली का गोश्त भेजा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तनावुल फ़रमाया।

(مسلم ص ۱۰۷۰ حدیث ۱۹۳۵ مُلَخَّصاً)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ وَ آلہٖ وَسلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

एक इश्काल और उस का जवाब

सुवाल : इस ह़दीसे पाक में जो येह आया कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उ़बैदा** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने पहले तो उस मछली को मुर्दार कहा फिर **ह़ालते इज़्तिरार** क़रार दे कर तनावुल भी फ़रमाया, यहां तक तो मस्अला वाज़ेह़ है और इस की गुन्जाइश भी है लेकिन ह़दीसे मुबा–रका में आगे चल कर येह भी है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी उस मछली से कुछ तनावुल फ़रमाया ह़ालां कि सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो **ह़ालते इज़्तिरार** में नहीं थे इस का क्या जवाब होगा ?

जवाब : जवाबन दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के एक मुफ़्ती साह़िब की तह़क़ीक़ चन्द अल्फ़ाज़ के रद्दो बदल के साथ पेश की जाती है : **मछली** ऐसा जानवर है जिस के ज़ब्ह़ की ह़ाजत नहीं होती। ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उ़बैदा** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को उस के ह़लाल होने का इ़ल्म नहीं था या फिर येह कि मिलने वाली मछली ऐसी थी जो समुन्दर के कनारे पड़ी हुई मिली थी, उसे बा क़ाइ़दा शिकार नहीं किया गया था इस बिना पर मज़ीद शुकूक

पैदा हुए और उन्हों ने उस मछली को मुर्दार क़रार दिया मगर फिर अपने इज्तिहाद से **ह़ालते इज़्तिरार** की बिना पर उसे खाने का हुक्म दिया लेकिन उन का मछली को मुर्दार गुमान करना (इज्तिहादी ख़त़ा थी) इसी बिना पर सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ालते इज़्तिरार न होते हुए भी उसे तनावुल फ़रमाया। शारिह़ीने ह़दीस ने सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से उस मछली के खाए जाने के सिल्सिले में मुख़्तलिफ़ निकात इर्शाद फ़रमाए हैं म-सलन येह ग़ैबी रिज़्क़ और ब-र-कत वाला गोश्त था इस लिये मह़बूबे रब, ताजदारे अ़रब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे त़लब फ़रमा कर तनावुल फ़रमाया, وَغَيْرُ ذٰلِك, इस नुक्ते के साथ साथ ऐ़न मुम्किन है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ (की इज्तिहादी ख़त़ा दूर करने) के लिये ग़ैबदान आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बत़ौरे ख़ास उस मछली का गोश्त तनावुल फ़रमाया ताकि उन को और दीगर ह़ज़रात को उस के ह़लाल होने का इ़ल्म हो जाए।

ह़ालते इज़्तिरार क्या है ?

सुवाल : इस सुवाल जवाब में "ह़ालते इज़्तिरार" का तज़्किरा किया गया है। बराहे करम ! इस की कुछ वज़ाह़त कर दीजिये।

जवाब : ह़ालते इज़्तिरार की तफ़्सील "तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान" सफ़ह़ा 56 से मुला-ह़ज़ा हो : मुज़्त़र वोह है जो ह़राम चीज़ के खाने पर मजबूर हो और उस को न खाने से ख़ौफ़े जान (या'नी जान चली जाने का ख़ौफ़) हो ख़्वाह तो शिद्दत की भूक या

नादारी की वज्ह से जान पर बन जाए और कोई ह़लाल चीज़ हाथ न आए या कोई शख़्स ह़राम के खाने पर जब्र करता हो और इस से जान का अन्देशा हो ऐसी ह़ालत में जान बचाने के लिये ह़राम चीज़ का क़दरे ज़रूरत या'नी इतना खा लेना जाइज़ है कि ख़ौफ़े हलाकत न रहे। (बल्कि इतना खाना फ़र्ज़ है)

अमीनुल उम्मह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के जज़्बे और वल्वले के क़ुरबान ! ऐसी तंगी और उ़सरत कि रोज़ाना सिर्फ़ एक खजूर और दरख़्तों के पत्ते खा कर भी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दुश्मनों से लड़ते और अपनी जानें क़ुरबान करते थे। येह उन्हीं की क़ुरबानियों का सदक़ा है जो आज दुन्या में हर त़रफ़ दीने इस्लाम की बहारें हैं, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने राहे ख़ुदा के हर सफ़र में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लिया ख़्वाह वोह दुश्मनों के मुक़ाबले में क़िताल (या'नी जंग) का मुआ़-मला हो या इ़ल्मे दीन सीखना और सिखाना मक़्सूद हो। इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने के लिये हमें राहे ख़ुदा में सफ़र का ज़ेह्न बनाना चाहिये और दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र कर के अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी चाहिये। अभी जो **ह़िकायत** आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाई इस मुहिम का नाम "**सीफ़ुल बह़्र**" है, तीन सो जांबाज़ों की फ़ौज के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उ़बैदा बिन जर्राह़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ "अ़-श-रए मुबश्शरह" से थे। बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इन को "**अमीनुल उम्मह**" (या'नी उम्मत का अमानत दार) का प्यारा लक़ब इनायत हुवा था। इब्तिदाए इस्लाम में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की

इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में मुसल्मान हुए थे । निहायत ही दिलेर, शेरदिल, बुलन्द क़ामत थे और चेह्रए मुबा-रका पर गोश्त कम था, ग़ज़्वए उहुद के मौक़अ़ पर मदीने के ताजदार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सारे पुर अन्वार में लोहे के ख़ौद की दो कड़ियां पैवस्त हो गई थीं, उन्हों ने अपने दांतों से उन को खींच कर निकाला इस वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दो अगले दांत शहीद हो गए थे । (الاصابہ ج٣ ص٤٧٥،٤٧٦)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़्वए सीफ़ुल बह़्र के मौक़अ़ पर क़द-आवर मछली का मिल जाना, एक माह तक सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का उस को तनावुल फ़रमाना, ऊंटों पर लाद कर साथ लाना, **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا भी साथ ले आना, **मछली** के गोश्त के ज़ाएक़े में तग़य्युर न आना[1] येह सब **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत से सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ब-र-कतें थीं । राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में जो भी सफ़र करता है, उस पर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ख़ूब रह़मतें नाज़िल होतीं, मुसीबतों में भी अ़-ज़्-मतें मिलतीं और रन्जो आलाम राह़तों में ढल जाते हैं । हर

مدینہ

1 انظر: شرح صحیح مسلم للقاضی عیاض ج٦ ص٣٧٦

मुसल्मान को सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की इन अ़ज़ीम क़ुरबानियों से दर्स ह़ासिल करते हुए ख़िदमते इस्लाम के लिये कमर बस्ता रहना चाहिये।

दिल का मरीज़ ठीक हो गया

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के हर फ़र्द का येह "म-दनी मक़्सद" है : **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" इस म-दनी मक़्सद के ह़ुसूल के लिये आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये शह्‌र ब शह्‌र और गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, हर मुसल्मान को **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन कर इस की ब-र-कतें लूटनी चाहिएं। राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र पर निकले हुए मुक़द्दस अफ़राद की **क़द-आवर मछली** के ज़रीए ग़ैबी इमदाद की ह़िकायत आप ने अभी मुला-ह़ज़ा फ़रमाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज भी जो इख़्लास के साथ इस्लाम की ख़िदमत की तड़प ले कर घरों से निकलते हैं वोह मह़रूम नहीं रहते। इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले की एक **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई को दिल की तक्लीफ़ हुई, डॉक्टर ने बताया कि आप के दिल की दो नालियां बन्द हैं, एन्जियो ग्राफ़ी (ANGIOGRAPHY) करवा लीजिये। इ़लाज पर हज़ारहा रुपै का ख़र्च आता था, येह बेचारे ग़रीब घबराए हुए थे, एक इस्लामी भाई ने उन पर

इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के ''म-दनी क़ाफ़िले'' में सफ़र कर के वहां दुआ़ मांगने की तरग़ीब दिलाई, चुनान्चे वोह तीन दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बने, वापसी पर त़बीअ़त बेहतर पाई । जब टेस्ट करवाए तो तमाम रिपोर्टें दुरुस्त थीं, डॉक्टर हैरत से उछल पड़ा और कहने लगा कि तुम्हारे दिल की दोनों बन्द नालियां खुल चुकी हैं । आख़िर येह कैसे हुवा ? जवाब दिया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के दुआ़ करने की ब-र-कत से मुझे दिल के मोहलिक मरज़ से नजात मिल गई है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
दिल में गर दर्द हो डर से रुख़ ज़र्द हो पाओगे फ़रह़तें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

समुन्दर की फेंकी हुई मछली खाना कैसा ?

सुवाल : समुन्दर जिन मछलियों को पानी से बाहर फेंक दे और वोह पानी के न होने की बिना पर मर जाएं तो क्या वोह ह़लाल हैं ?

जवाब : जवाबन दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के एक मुफ़्ती साहि़ब की तह़क़ीक़ चन्द अल्फ़ाज़ के रद्दो बदल के साथ पेश की जाती है : जी हां ऐसी मछलियां ह़लाल हैं और अभी बयान कर्दा **ह़दीसे अ़म्बर** इस की वाज़ेह़ दलील है, फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने येह मस्अला तफ़्सील के साथ कुतुबे फ़िक़्ह में तह़रीर फ़रमाया

है। ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : "समुन्दर जिस मछली को फेंक दे या (मछली के कनारे के क़रीब पहुंचने पर) पानी पीछे हट गया (और वोह मछली ख़ुश्की में आने के सबब मर गई) तो ऐसी मछली को खाओ और जो (बिला सबब) पानी में मर कर उलटी तैर गई वोह न खाओ।" **(ابو داؤد ج۳ص۵۰۲ حدیث۳۸۱۵)**

"मब्सूत़" में है : हमारे नज़्दीक मछली के बारे में अस्ल इबाह़त है (या'नी मुबाह़ होना। इस मक़ाम पर मुबाह़ से मुराद वोह जानदार है जिस के ह़लाल होने के लिये ज़ब्ह़ की ह़ाजत नहीं लिहाज़ा) अगर वोह किसी सबब के ज़रीए़ से मर गई तो ह़लाल है और बिग़ैर सबब के या'नी ख़ुद ब ख़ुद मरी तो नहीं खाई जाएगी और अगर किसी परिन्दे ने उसे मार दिया तब भी खाई जाएगी अगर्चे वोह परिन्दा उसे उठा कर पानी में डाल दे और वोह मर जाए, यूंही अगर वोह किसी जाल में फंस जाए और उस से न निकल पाए और मर जाए तब भी खाई जाएगी, अगर कोई ऐसी चीज़ पानी में डाली जिस के खाने से मछली मर गई और पता हो कि इस के खाने से मरी है तो खाई जाएगी, यूंही पानी के पीछे हट जाने की वज्ह से हलाक हुई तब भी खाई जाएगी, इसी त़रह़ पानी की लहर ने उसे बाहर फेंक दिया और वोह मर गई तब भी खाई जाएगी। **(اَلمَبسوط لِلسَّرَخْسی ج ۱۱ ص ۲۷۷)**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سُنّی)

क्या ज़मीन मछली की पीठ पर है ?

सुवाल : कहा जाता है कि ज़मीन एक बहुत बड़ी मछली की पीठ पर है और पहाड़ों के वुजूद का सबब भी येही मछली बनी है !

जवाब : जी हां, इस के मु-तअ़ल्लिक़ रिवायात मौजूद हैं चुनान्चे **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 27 सफ़ह़ा 95 पर दर्ज एक ह़दीसे पाक का तरजमा कुछ यूं है : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन मख़्लूक़ात में सब से पहले **क़लम** पैदा किया, उस से कहा : "लिखो !" उस ने अ़र्ज़ की : क्या लिखूं ? इर्शाद हुवा : क़द्र (या'नी तक़्दीर) को लिखो, चुनान्चे उस क़लम ने वोह सब कुछ लिखा जो क़ियामत तक होने वाला था, फिर उस किताब को लपेट दिया गया और क़लम को उठा लिया गया। अ़र्शे इलाही पानी पर था, पानी के बुख़ारात (अब्ख़रह की जम्अ़। अब्ख़रह या'नी भाप) उठे, उन से आस्मान जुदा जुदा बनाए गए फिर मौला عَزَّوَجَلَّ ने **मछली** पैदा की, उस पर ज़मीन बिछाई, ज़मीन पुश्ते माही (या'नी मछली की पीठ) पर है, **मछली** तड़पी, ज़मीन झोंके लेने लगी तो उस पर **पहाड़** जमा कर बोझल कर दी गई। **(تفسیر دُرِّمَنْثور ج۸ص۲۴۰)**

सब से पहले नूरे मुस्त़फ़ा पैदा हुवा या क़लम ?

सुवाल : बयान कर्दा रिवायत में सब से पहले क़लम की पैदाइश का तज़्किरा है जब कि येह भी रिवायात हैं कि सब से पहले नूरे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

मुस्त़फ़ा पैदा किया गया है, दोनों में तत़्बीक़ (मुवा-फ़क़त) कैसे हो ?

जवाब : सह़ीह़ ह़दीस में है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का इर्शादे नूरबार है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम चीज़ों से पहले मेरे **नूर** को पैदा फ़रमाया। उस वक़्त न लौह़ थी न क़लम, न जन्नत, न दोज़ख़ न फ़िरिश्ते थे, न आस्मान, न ज़मीन, न सूरज न चांद, न जिन्न न इन्सान थे, फिर जब रब عَزَّوَجَلَّ ने और मख़्लूक़ को पैदा करना चाहा तो उस **नूर** के चार ह़िस्से किये, एक ह़िस्से से क़लम दूसरे से लौहे़ मह़फ़ूज़ तीसरे से अ़र्श वग़ैरा पैदा फ़रमाया।" (اَلْمَواھِب ج ۱ ص۳۶، کَشْفُ الْخفاء ج۱ص۲۳۷، مدارِجُ النّبوۃ ج ۲ ص۲ مُلَخّصاً)

जिन जिन चीज़ों की निस्बत रिवायात में अव्वलिय्यत का हुक्म आया है उन अश्या का नूरे मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم से बा'द में होना इस ह़दीस से साबित है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنّان ने ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "रब ने जो चीज़ पहले पैदा की वोह क़लम था" के तह़त फ़रमाते हैं : येह अव्वलिय्यत इज़ाफ़ी है या'नी अ़र्श, पानी, हवा और लौहे़ मह़फ़ूज़ की पैदाइश के बा'द जो चीज़ सब से पहले पैदा हुई वोह **क़लम** है। "मिरक़ात" में इस जगह है कि सब से पहले नूरे मुह़म्मदी (صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) पैदा हुवा, वहां अव्वलिय्यते ह़क़ीक़िया मुराद है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 103) इमाम क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं :

क़लम की अव्वलिय्यत नूरे मुह़म्मदी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم), पानी और अ़र्श के इ़लावा (मख़्लूक़ात) की निस्बत से है। येह भी कहा गया है कि हर एक की अव्वलिय्यत उस की जिन्स (या'नी क़िस्म) की त़रफ़ इज़ाफ़त के ए'तिबार से है या'नी अन्वार में से सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे **नूर** (नूरे मुह़म्मदी) को पैदा फ़रमाया, इसी त़रह़ दूसरी अश्या भी पैदा होने के लिह़ाज़ से अपनी अपनी जिन्स (या'नी क़िस्म) में पहली हैं। **(اَلْمَواهِب ج١ ص ٣٨)**

क़लम के बारे में वज़ाह़त

सुवाल : आप के जवाब में बयान की गई रिवायत में क़लम का ज़िक्र है, क़लम के बारे में वज़ाह़त दरकार है।

जवाब : जवाबन दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के एक मुफ़्ती साह़िब की तह़क़ीक़ चन्द अल्फ़ाज़ के रद्दो बदल के साथ पेश की जाती है : क़ुरआने करीम के पारह 29 में **सू-रतुल क़लम** है, उस की इब्तिदाई आयत : "نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۙ﴿۱﴾" के तह़त "तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में है : "अल्लाह तआ़ला ने क़लम की क़सम ज़िक्र फ़रमाई इस क़लम से मुराद या तो लिखने वालों के क़लम हैं जिन से दीनी दुन्यवी मसालेह़ व फ़वाइद वाबस्ता हैं और या क़-लमे आ'ला मुराद है जो नूरी क़लम है और इस का तूल फ़ासिलए ज़मीन व आस्मान के बराबर है, इस ने ब हुक्मे इलाही **लौह़े मह़फ़ूज़** पर क़ियामत तक होने वाले तमाम उमूर लिख दिये।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1044)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان मिरआत शर्हे मिश्कात में फ़रमाते हैं : "क़लम ने लौहे़ मह़फ़ूज़ पर ब हुक्मे इलाही वाक़िआ़ते आ़लम अ-ज़ली से अबद तक ज़र्रा ज़र्रा, क़त़रा क़त़रा लिख दिया। ख़याल रहे कि येह तह़रीर इस लिये न थी कि रब को भूल जाने का ख़त़रा था बल्कि इस का मन्शा फ़िरिश्तों और बा'ज़ मह़बूब इन्सानों को इस पर मुत्त़लअ़ करना था [از مرقاۃ ج۱ ص۲۵۸] मज़ीद फ़रमाते हैं : पानी आस्मान व ज़मीन वग़ैरा से पहले पैदा हुवा, अ़र्श के पानी पर होने का येह मत़लब है कि इन दोनों के बीच में कोई आड़ न थी न येह कि पानी पर रखा हुवा था वरना अ़र्श तमाम अजसाम से बहुत बड़ा है।" [اشعہ ج۱ ص۹۵]

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 90, 91)

जन्नत की सब से पहली ग़िज़ा

सुवाल : जन्नत की सब से पहली ग़िज़ा क्या होगी ?

जवाब : बुख़ारी शरीफ़ में वारिद एक फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़िस्सा है : "पहला वोह खाना जिसे जन्नती खाएंगे वोह **मछली की कलेजी का कनारा** है।" (بخاری ج ۲ ص۶۰۵ حدیث۳۹۳۸) ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़ली क़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : बा'ज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि "येह वोह मछली है कि जिस पर ज़मीन ठहरी हुई है।" उस की कलेजी का मज़ेदार कनारा खिलाया जाएगा, जो सब से ज़ियादा लज़ीज़ होता है।

(مرقاۃ ج۱۰ ص ۱۸۹ تحت الحدیث ۵۸۷۰)

मछली बोल नहीं सकती इस की अ़जीबो ग़रीब ह़िक्मत

सुवाल : सारे जानवर बोलते हैं मगर मछली नहीं बोलती इस में क्या ह़िक्मत है ?

जवाब : इस की ह़िक्मत रब्बुल इ़ज़्ज़त ही जानता है। "**मुका-श-फ़तुल क़ुलूब**" में इस की येह **अ़जीबो ग़रीब ह़िक्मत** लिखी है : "**अल्लाह तआ़ला** ने तमाम जानवरों को ज़बान से मुशर्रफ़ फ़रमाया है मगर मछली को मह़रूम किया गया है। इस का सबब येह है कि सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सज्दा करने से इन्कार की वज्ह से जब शैत़ाने लईन की शक्ल बिगाड़ कर ज़मीन पर फेंक दिया गया तो इस ने समुन्दर का रुख़ किया, इसे सब से पहले **मछली** नज़र आई, शैत़ान ने सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की पैदाइश का वाक़िआ़ सुनाते हुए येह भी कहा कि वोह ख़ुश्की और पानी के जानवरों का शिकार करेंगे। **मछली** ने तमाम दरियाई जानवरों में येह बात फैला दी इस वज्ह से इसे **बोलने की सलाह़िय्यत** से मह़रूम कर दिया गया।" **(مُکاشَفۃُ الْقُلوب ص۷۱)**

मछली के त़िब्बी फ़वाइद

कौन सी मछली ज़ियादा मुफ़ीद है ?

सुवाल : कौन सी मछली उ़म्दा होती है ? मछली के मज़ीद कुछ त़िब्बी फ़वाइद भी बता दीजिये।

जवाब : अ़ल्लामा दमीरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सब से उ़म्दा

मछली समुन्दर की वोह छोटी मछली होती है जिस की पीठ पर नक़्श होते हैं, इस के खाने से बदन में ताज़गी आती है। मछली खाने से उ़मूमन प्यास ज़ियादा लगती है, बल्ग़म में इज़ाफ़ा होता है हां गर्म मिज़ाज वालों और नौ जवानों के लिये मछली खाना मुफ़ीद है। अगर शराबी, मछली सूंघ ले तो उस का नशा उतर जाए और वोह होश में आ जाए। ह़कीम इब्ने सीना का क़ौल है : अगर मछली शह्द के हमराह खाई जाए तो **नुज़ूलुल माअ** ("मोतिया बिन्द" या'नी आंख में पानी उतर आने का मरज़ जिस से बीनाई जाती रहती है) के मरज़ में फ़ाएदा होता है नीज़ इस से नज़र भी तेज़ होती है। **(حَیاۃُ الحَیَوان ج۲ ص۴۳،۴۴)** एक तिब्बी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ सर्दी से होने वाली खांसी का मछली से बेहतर कोई इलाज नहीं।

क्या मछली बिल्कुल न खाना मुज़िर्रे सिह़्ह़त है ?

सुवाल : मछली बिल्कुल ही न खाना कहीं मुज़िर्रे सिह़्ह़त तो नहीं ?

जवाब : ख़ैर यक़ीनी त़ौर पर तो कुछ नहीं कहा जा सकता अलबत्ता माहिरीन के तअस्सुरात के मुत़ाबिक़ **मछली** इन्सानी सिह़्ह़त के लिये निहायत अहम ग़िज़ा है, इस में बा'ज़ ऐसे अज्ज़ा होते हैं जो किसी और गोश्त में नहीं पाए जाते, मिसाल के त़ौर इस में आयोडीन (IODINE) होता है जो कि सिह़्ह़त के लिये निहायत अहम्मिय्यत का ह़ामिल है इस की कमी से जिस्म के ग़ुदूदी

निज़ाम का तवाज़ुन बिगड़ सकता है, गले के अहम ग़ुदूद थाइरॉइड (Thyroid) में सुक़्म (या'नी ख़ामी) पैदा हो कर जिस्मानी निज़ाम में बहुत सी ख़राबियां पैदा हो सकती हैं। वोह ममालिक जहां समुन्दरी ग़िज़ा का इस्ति'माल कम किया जाता है वहां के बाशिन्दे आ़म तौ़र पर इन बीमारियों का शिकार रहते हैं। **मछली बतौ़रे ग़िज़ा इस्ति'माल करने वालों की उ़म्रें लम्बी होती हैं,** यहां तक कि वोह मरीज़ भी इस के फ़वाइद से मह़रूम नहीं रहते जो आख़िरी द-रजे के आ़रिज़ए क़ल्ब (या'नी दिल की बीमारी) में मुब्तला होते हैं।

हफ़्ते में दो बार तो मछली खा ही लेनी चाहिये

सुवाल : मछली रोज़ाना ही खाई जाए या कभी कभी ?

जवाब : आप की सवाब दीद पर है। माहिरीन का कहना है : हफ़्ते में कम अज़ कम दो बार तो ज़रूर **मछली** खा लेनी चाहिये, इस त़रह़ दिल की बीमारी से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल हो सकता है, एक इत्त़िलाअ़ के मुत़ाबिक़ "वेल्ज़" में ऐसे 2000 मरीज़ों पर तजरिबा किया गया जिन पर पहली बार दिल के मरज़ का ह़म्ला (HEART ATTACK) हुवा था। उन में से जिन्हें हफ़्ते में **दो बार मछली** खाने का मश्वरा दिया गया था उन पर आयिन्दा दो साल तक आ़रिज़ए क़ल्ब का कोई ह़म्ला नहीं हुवा जब कि उन ही मरीज़ों में से जिन्हें **मछली** खाने का नहीं कहा गया, उन्हें

अगले दो साल के अन्दर आ़रिज़ए क़ल्ब (या'नी दिल के मरज़) में दोबारा मुब्तला होते देखा गया। एक अमरीकी त़िब्बी जरीदे में शाए़अ़ होने वाली रपोर्ट के मुत़ाबिक़ ग़िज़ा में मछली का ज़ाइद इस्ति'माल **मसाने के केन्सर** की अफ़्ज़ाइश (या'नी बढ़ोतरी) कम करने की भरपूर सलाहि़य्यत रखता है। त़िब्बी माहिरीन के मुत़ाबिक़ मछली का बा क़ाइदा इस्ति'माल मसाने के केन्सर को बढ़ने से 50 फ़ीसद तक रोक सकता है जिस के बाइ़स इस मरज़ की वज्ह से होने वाली हलाकतों में भी कमी वाक़ेअ़ हो सकती है।

सुवाल : मछली खाने के बा'द दूध पीना कैसा ?

जवाब : अत़िब्बा के मुत़ाबिक़ मछली खाने के बा'द दूध पीने से सफ़ेद दाग़ होने का अन्देशा है।

मछली के तेल के फ़वाइद

सुवाल : क्या मछली का तेल भी होता है ? अगर हां तो इस के भी कुछ फ़ाएदे बता दीजिये।

जवाब : मछली का तेल दर अस्ल उस के **जिगर** का तेल होता है, इसे (COD LIVER OIL) कहते हैं, इस का एक चम्मच पीना **गठिया** या'नी जोड़ों के दर्द के लिये मुफ़ीद है। एक डॉक्टर का कहना है कि जिस त़रह़ मछली खाना मुफ़ीद है इसी त़रह़ से **मछली का तेल** भी अगर लम्बे अ़र्से तक इस्ति'माल किया जाए तो फ़ाएदे

से ख़ाली नहीं। इस के इस्ति'माल से ख़ून की नालियों में पैदा होने वाली इब्तिदाई रुकावटों जिन से शिरयानों (या'नी दिल की छोटी रगों) की सख़्ती की वज्ह से आ़रिज़ए क़ल्ब (या'नी दिल की बीमारी) का अन्देशा होता है, से तह़फ़्फ़ुज़ मिल जाता है। **दिल की बीमारी** का एक सबब ख़ून में कोलेस्ट्रोल (CHOLESTEROL) का इज़ाफ़ा भी है। कोलेस्ट्रोल ख़ून की नालियों के रास्ते या तो तंग कर देता है या बिल्कुल ही बन्द कर देता है, इस से दिल की ह़-र-कत बन्द हो कर मौत वाक़ेअ़ हो सकती है। **मछली का तेल** ख़ून की रगों की दीवारों को गढ़ों और रुकावटों से बचाता है क्यूं कि इन ही मक़ामात पर कोलेस्ट्रोल जमता और दौराने ख़ून के लिये रुकावट बनता है। (येह बात हमेशा याद रखने वाली है कि सुने सुनाए और किताबों में लिखे हुए इलाज मुआ़-लजे अपने त़बीब के मश्वरे के बा'द ही करने चाहिएं क्यूं कि हर एक की त़ब्ई कैफ़िय्यत एक त़रह़ की नहीं होती, बारहा ऐसा होता है कि एक ही चीज़ किसी के लिये मुफ़ीद तो किसी के लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) साबित होती है)

मछली के सर के फ़वाइद

सुवाल : क्या "मछली का सर" खाने के भी फ़वाइद हैं ?

जवाब : क्यूं नहीं, येह भी **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की इनायत की हुई निहायत लज़्ज़त वाली ने'मत है। **मछली के सर** में से

उ़मूमन आंखें निकाल कर फेंक दी जाती हैं ह़ालां कि बड़ी मछली की आंखों के नीचे की चरबी इन्तिहाई लज़ीज़ होती है। मछली के सर की **यख़्नी** जिसे शोरबा या सूप (SOUP) भी कहते हैं। बीनाई की कमज़ोरी और दीगर कई अमराज़ के लिये फ़ाएदे मन्द है, बा क़ाइ़-दगी से येह यख़्नी पीने से आंखों के चश्मे उतर सकते हैं।

मछली के सर की यख़्नी बनाने का त़रीक़ा

सुवाल : मछली के सर की यख़्नी बनाने का त़रीक़ा बयान कर दीजिये।

जवाब : **यख़्नी** बनाने का त़रीक़ा बहुत आसान है। **मछली के सर** के टुकड़े टुकड़े कर के दो तीन घन्टे पानी में भिगो कर रख दीजिये, इस के बा'द धो कर नए पानी में डाल कर मअ़ मिर्च मसाला और ह़स्बे ज़रूरत नमक चढ़ा कर सूप बना लीजिये। हर तीन दिन बा'द सुब्ह़ नाश्ते से क़ब्ल एक पियाली नीम गर्म पीना आंखों के लिये निहायत मुफ़ीद है। कहते हैं कि एक आदमी ने सिर्फ़ तीन पियालियां पी थीं कि **उन की ऐ़नक उतर गई !** मगर ज़रूरी नहीं कि हर एक की ऐ़नक इसी त़रह़ जल्द उतर जाए। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत पर नज़र रखते हुए इस्तिक़ामत के साथ पीना चाहिये।

मछली के सर की यख़्नी कई अमराज़ के लिये मुफ़ीद है

सुवाल : मछली के सर की यख़्नी और कौन कौन सी बीमारियों में कारआमद है ?

जवाब : मछली के सर की यख़्नी (सूप) फ़ालिज, लक़्वा, इ़र्क़ुन्निसा (या'नी लंगड़ी का दर्द जो कि चड्ढे से ले कर पाउं के टख़्ने तक पहुंचता है) आ'साबी कमज़ोरी, पठ्ठों की कमज़ोरी, क़ब्ल अज़ वक़्त बुढ़ापा, जोड़ों का पुराना दर्द, जिस्मानी और आ'साबी खिचाव और क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा बढ़ाने के लिये निहायत मुफ़ीद है। ऐसे लोग जो अपनी याद दाश्त बिल्कुल खो चुके हों या जिन की याद दाश्त ख़त्म होने के क़रीब हो वोह ख़्वाह जवान हों या बूढ़े येह यख़्नी (सूप) ज़रूर इस्ति'माल करें। अगर गर्मी के मौसिम में ना मुवाफ़िक़ मह़सूस करें तो सर्दियों में इस्ति'माल करें। अगर आप को बयान कर्दा तमाम बीमारियों में से कोई मरज़ नहीं तब भी अगर कुछ अ़र्सा मछली के सर का सूप इस्ति'माल फ़रमाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه इन बीमारियों से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल होगा।

मछली और क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा

सुवाल : क्या मछली का इस्ति'माल क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा पर भी असर अन्दाज़ होता है ?

जवाब : जी हां। ख़ुसूसन मछली का तेल और फलों का इस्ति'माल **क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा** के लिये मुफ़ीद है। माहिरीन की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ फलों, सब्ज़ियों और मछली में विटामिन सी और फ़्लेवो नोंइड्ज़

(Flavonoids) पाए जाते हैं जो जिस्म में सोज़िश नहीं होने देते नीज़ इन में पाए जाने वाले "ओमेगा 3" दिमाग़ की बैरूनी तह को सोज़िश से बचाते हैं जिस की वज्ह से याद दाश्त भी मु-तअस्सिर नहीं होती। माहिरीन ने 65 साल से ज़ाइद उ़म्र के 8085 मर्द व ख़्वातीन को उन के खाने पीने की अश्या, त़र्ज़े ज़िन्दगी, याद दाश्त, ग़िज़ाओं और सिह़्ह़त के बारे में सुवाल नामे फ़राहम कर के 4 साल तक उन की तह़क़ीक़ की जिस के दौरान मा'लूम हुवा कि फल, सब्ज़ियां और मछली का तेल ज़ियादा इस्ति'माल करने वालों की याद दाश्त दूसरों से बेहतर होती है। एक त़बीब का कहना है : हिन्द की रियासत "केराला" के एक साहि़ब ने बैरूने मुल्क मुझे बताया कि केराला के लोग रियाज़ी (जिस में हि़साब, अलजिब्रा और ज्योमेट्री वग़ैरा में शामिल होता है) साइन्स और दुन्या के दीगर मुश्किल तरीन उ़लूम में काफ़ी बा कमाल होते हैं। मैं ने इस कमाल की वज्ह पूछी तो कहने लगे : मछली और मछली के सर का इस्ति'माल।

केकड़ा ह़लाल है या ह़राम ?

सुवाल : केकड़ा ह़लाल है या ह़राम ?

जवाब : ह़राम है। **मछली के सिवा** दरिया का हर जानवर खाना ह़राम है।

मलिकुल उ़-लमा इमाम अ़लाउद्दीन अबू बक्र बिन मस्ऊ़द

कासानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی इस बारे में फ़रमाते हैं : **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ (پ۹ الاعراف ۱۵۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और गन्दी चीज़ें इन पर ह़राम करेगा।

और मेंडक, **केकड़ा** और सांप वग़ैरा ख़बाइस (गन्दी चीज़ों) में से हैं। (بَدائِعُ الصَّنائِع ج٤ ص ١٤٤) **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "सरत़ान (या'नी केकड़ा) खाना ह़राम है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 208)

झींगा खाना कैसा ?

सुवाल : झींगा खाना कैसा है ?

जवाब : **झींगे** के मछली होने में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है, इसी बिना पर इस की ह़िल्लत व ह़ुरमत (या'नी ह़लाल व ह़राम होने) में भी इख़्तिलाफ़ है। जिन के नज़्दीक **झींगा** मछली की अक़्साम में से है उन के नज़्दीक ह़लाल है और जिन के नज़्दीक मछली की अक़्साम में से नहीं उन के नज़्दीक ह़राम है। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की तह़क़ीक़ है कि **झींगा** मछली ही की एक क़िस्म है, चुनान्चे फ़रमाते हैं : "हमारे (या'नी ह़-नफ़ी) मज़हब में मछली के सिवा तमाम दरियाई जानवर मुत़्लक़न ह़राम हैं तो जिन

(अहले तह़क़ीक़ رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام) के ख़याल में **झींगा** मछली की क़िस्म से नहीं उन के नज़्दीक ह़राम होना ही चाहिये मगर फ़क़ीर (या'नी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने कुतुबे लुग़त व कुतुबे त़िब व कुतुबे इ़ल्मे ह़–यवान में बिल इत्तिफ़ाक़ तसरीह़ देखी कि वोह **मछली** है।" **झींगे** के मछली होने पर कसीर जुज़्इय्यात नक़्ल करने के बा'द आख़िर में फ़रमाया : बहर ह़ाल ऐसे शुबा व इख़्तिलाफ़ (झींगे में हैं लिहाज़ा इस के खाने) से बे ज़रूरत बचना ही चाहिये। (फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 20, स. 336 ता 339)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "बहारे शरीअ़त" जिल्द 3 सफ़ह़ा 325 पर फ़रमाते हैं : **झींगे** के मु–तअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ है कि येह मछली है या नहीं इसी बिना पर इस की ह़िल्लत व हु़रमत (या'नी ह़लाल व ह़राम होने) में भी इख़्तिलाफ़ है ब ज़ाहिर उस की सूरत मछली की सी नहीं मा'लूम होती बल्कि एक क़िस्म का कीड़ा मा'लूम होता है लिहाज़ा इस से बचना ही चाहिये।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कभी झींगा न खाया

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इस फ़क़ीर और इस के घर वालों ने उ़म्र भर (झींगा) न खाया और न इसे खाएंगे। (फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 20, स. 339) मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना वक़ारुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن की ख़िदमत में सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ

ह़ाज़िर था, बर सबीले तज़्किरा मुफ़्ती साह़िब ने फ़रमाया : मैं झींगे नहीं खाता, एक बार घर में पकाए गए थे मैं ने कह दिया कि झींगे के सालन का चम्मच भी मेरे सालन में न डाला जाए।

झींगा खाने से कोलेस्ट्रोल में इज़ाफ़ा होता है

झींगा अगर खाना ही हो तो उस का छिलका उतार कर उस की पुश्त को लम्बाई में इब्तिदा से ले कर दुम तक अच्छी त़रह़ चीर कर काली डोरी नुमा आलाइश निकाल दी जाए। झींगे ज़ियादा न खाए जाएं कि इन में कोलेस्ट्रोल की मिक़्दार ज़ियादा होती है।

झींगा बिग़ैर सफ़ाई किये खाना

सुवाल : क्या काली डोरी निकाले बिग़ैर झींगा खाना गुनाह है ?

जवाब : गुनाह तो नहीं अलबत्ता बेहतर येही है कि काली डोरी निकाल दी जाए। फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में झींगे के ह़लाल होने की बह़्स करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, "अन्वारुल असरार" में है : "रूबियान (या'नी झींगा) बहुत छोटी मछली सुर्ख़ रंग होती है।" आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : "मे'राजुद्दिरायह" में साफ़ फ़रमाया कि ऐसी छोटी मछलियां जिन का पेट चाक नहीं किया जाता और बे आलाइश निकाले भून लेते हैं इमाम शाफ़ेई के सिवा सब अइम्मा के नज़्दीक ह़लाल हैं।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 338)

छोटी मछलियां बिग़ैर आलाइश निकाले खाना

सुवाल : बहुत छोटी मछलियों के पेट की आलाइश निकालना दुश्वार होता है अगर बिग़ैर सफ़ाई किये खा लें तो कैसा ?

जवाब : जाइज़ है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **बहारे शरीअ़त** जिल्द 3 सफ़ह़ा 325 पर है : छोटी मछलियां बिग़ैर शिकम चाक किये (या'नी पेट साफ़ किये बिग़ैर) भून ली गईं इन का खाना ह़लाल है।

मछली के ज़ब्ह़ न करने की ह़िक्मत

सुवाल : मछली बिग़ैर ज़ब्ह़ खाई जाती है इस में क्या ह़िक्मत है ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **मछली** और **टीरी** (या'नी टिड्डी) में ख़ून होता ही नहीं कि इस के इख़्राज (या'नी ख़ारिज करने) की ह़ाजत हो, ग़ैर द-मवी (या'नी जिस में ख़ून न हो) जानवरों में हमारे यहां सिर्फ़ येही दो ह़लाल हैं लिहाज़ा सिर्फ़ येही बे ज़ब्ह़ खाए जाते हैं। शाफ़िइय्या वग़ैरहुम के नज़्दीक कि और दरियाई जानवर भी कुल या बा'ज़ ह़लाल हैं वोह उन्हें भी बे ज़ब्ह़ जाइज़ जानते हैं कि **दरिया के किसी जानवर में ख़ून नहीं होता।**

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 335)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

मछली का ख़ून पाक है या नापाक ?

सुवाल : मछली का **ख़ून** पाक है या नापाक ?

जवाब : पाक और नापाक का मस्अला तो उस वक़्त खड़ा होगा जब कि मछली में ख़ून भी हो, मछली के अन्दर तो **ख़ून** ही नहीं होता ! सियाही माइल सुर्ख़ गाढ़ा सा जो मवाद निकलता है वोह ख़ून नहीं है !

मछली का हर जुज़ पाक है

सुवाल : मछली की कौन कौन सी चीज़ें नापाक होती हैं ?

जवाब : मछली में कोई भी चीज़ नापाक नहीं।

सूखी मछली खाना कैसा ?

सुवाल : ख़ुश्क मछली ह़लाल है या ह़राम ?

जवाब : ह़लाल है अलबत्ता इस में बदबू होती है अब बदबू किस नौइय्यत की है आया आ़रिज़ी (Temporary) है या दाइमी (Long Lasting) इसी पर मुमा-न-अ़त होने न होने का दारो मदार है। याद रहे ! जिस आदमी के मुंह या बदन से बदबू आती हो उसे मस्जिद में जाना **ह़राम** और जमाअ़त में शामिल होना मम्नूअ़ है।

बासी मछली खाना कैसा ?

सुवाल : बासी मछली खाना कैसा ?

जवाब : अगर अभी सड़ी नहीं है तो खाने में ह़रज नहीं अलबत्ता सड़ी

हुई मछली या गोश्त नहीं खा सकते। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द 1 सफ़ह़ा 327 पर है : गोश्त सड़ गया तो उस का खाना **ह़राम** है। ख़राब होने की अ़लामत येह है कि उस में फफूंदी, बदबू या खट्टी बू पैदा हो जाती है। अगर शोरबा हो तो उस पर झाग भी आ जाता है। दालें, खिचड़ा और टमाटर या खटाई वाला सालन जल्द ख़राब होता है।

ताज़ा और बासी मछली की पहचान

सुवाल : क्या ताज़ा और बासी मछली की कोई पहचान भी है ?

जवाब : ताज़ा मछली रौनक़ दार और चमकदार सी होती और उस की आंख के ढेले उभरे हुए होते हैं, मछली को हाथ की उंगली से दबा कर देख लीजिये कि नर्म तो नहीं पड़ गई, ताज़ा मछली की सब से बड़ी पहचान येह है कि उस के गलफड़े गहरे लाल रंग के होंगे मगर खोल कर ग़ौर से देखना होगा क्यूं कि मुजरिमाना ज़ेह्न के मछली फ़रोश धोका देने के लिये आज कल गलफड़ों पर लाल रंग या ख़ून लगा देते हैं। गलफड़े पीले हों, खाल बे रौनक़ सी हो गई हो, गोश्त नर्म पड़ गया हो, बदबू ज़ियादा हो और आंखें धंसी हुई हों तो समझ लीजिये कि **मछली बासी** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

बत़ौरे तफ़्रीह़ मछली का शिकार खेलना कैसा ?

सुवाल : मछली का शिकार खेलना कैसा है ?

जवाब : तफ़्रीह़न "**शिकार खेलना**" ह़राम और ज़रूरतन "**शिकार करना**" जाइज़ है। इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **:** "शिकार, कि मह़ज़ शौक़िया ब ग़-रज़े तफ़्रीह़ हो, जैसे एक क़िस्म का "खेल" समझा जाता है। व लिहाज़ा "**शिकार खेलना**" कहते हैं। बन्दूक़ का हो ख़्वाह मछली का, रोज़ाना हो ख़्वाह गाह गाह (या'नी कभी कभी), मुत़्लक़न ब इत्तिफ़ाक़ **ह़राम** है, **ह़लाल** वोह है जो ब ग़रज़ खाने या दवा या किसी और नफ़्अ़ या किसी ज़रर के दफ़्अ़ को (या'नी नुक़्सान दूर करने के लिये) हो। आज कल के बड़े बड़े शिकारी जो इतनी नाक वाले हैं कि बाज़ार से अपनी ख़ास ज़रूरत के खाने या पहनने की चीज़ लाने को जाना अपनी कस्रे शान समझें या नर्म ऐसे कि दस क़दम धूप में चल कर मस्जिद में नमाज़ के लिये ह़ाज़िर होना मुसीबत जानें, वोह गर्म दो पहर, गर्म लू में गर्म रैत पर चलना और ठहरना और गर्म हवा के थपेड़े खाना गवारा करते और दो दो पहर बल्कि दो दो दिन शिकार के लिये घरबार छोड़े पड़े रहते हैं ! क्या येह खाने की ग़रज़ से जाते हैं ! ह़ाशा व कल्ला ! (या'नी हरगिज़ नहीं) बल्कि वोही लह्वो लइ़ब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

(या'नी खेल तमाशा) है और बिल इत्तिफ़ाक़ **ह़राम।** एक बड़ी पहचान येह है कि इन शिकारियों से अगर कहिये म-सलन : "मछली" बाज़ार में मिलेगी वहां से ले लीजिये, हरगिज़ क़बूल न कर सकेंगे या कहिये कि अपने पास से ला देते हैं, कभी न मानेंगे बल्कि शिकार के बा'द ख़ुद उस के खाने से भी चन्दां (या'नी कुछ) ग़रज़ नहीं रखते, बांट देते हैं, तो येह (शिकार के लिये) जाना यक़ीनन वोही **तफ़रीह़ व ह़राम** है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 341)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "शिकार करना एक मुबाह़ (या'नी जाइज़) फ़े'ल है मगर ह़रम या एह़राम में ख़ुश्की का जानवर शिकार करना ह़राम है,[1] इसी त़रह़ अगर शिकार मह़ज़ लह्व (या'नी खेल) के त़ौर पर हो तो वोह मुबाह़ (या'नी जाइज़) नहीं।" (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 680)

तफ़रीह़न किये गए शिकार का खाना कैसा ?

सुवाल : तो क्या तफ़रीह़न शिकार खेलने वाले ने जो कुछ शिकार से ह़ासिल किया उस का खाना भी ह़राम है ?

जवाब : जो मछली या ह़लाल जानवर शिकार किया उस का खाना ह़लाल है सिर्फ़ उस का तफ़रीह़न शिकार खेलने का फ़े'ल

मदीना

1 : मोह़रिम (या'नी एह़राम वाले) के लिये ज़रूरतन मछली का शिकार जाइज़ है।

ह़राम है, इस फे़'ल से सच्ची तौबा करनी वाजिब है। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "रही शिकार की हुई मछली इस का खाना हर त़रह़ **ह़लाल है** अगर्चे फे़'ले शिकार उन (गुज़श्ता जवाब में मज़्कूर) **ना जाइज़** सूरतों से हुवा हो।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 343)

मछली के शिकार के दर्दनाक मनाज़िर

बाबुल मदीना (कराची) में साह़िले समुन्दर (नेटी जेटी) पर छुट्टी के दिन मछली के शिकार के बड़े ही दर्दनाक मनाज़िर होते हैं, काफ़ी लोग डोर और कांटा ले कर सारा दिन शिकार खेलते रहते हैं। ज़िन्दा केंचवे के फड़क्ते टुकड़े कांटे में पिरोते हैं या झींगा नुमा एक दरियाई कीड़ा कांटे में ज़िन्दा अटका कर **ना जाइज़** फे़'ल के मुर-तकिब होते हैं। वहां एक मख़्सूस क़िस्म की मछली पाई जाती है अगर वोह पानी से बाहर निकाली जाए तो गुबारे की त़रह़ फूल जाती है अगर वोह कांटे में फंस जाए तो बेचारी को ज़िन्दा ही बुरी त़रह़ चीर फाड़ डालते हैं और **जहालत** की बिना पर उस को **ह़राम मछली** कहते हैं ह़ालां कि हर मछली की त़रह़ वोह भी ह़लाल है। अगर कोई केकड़ा फंस गया तो बेचारे की शामत ही आ जाती है या तो पटख़ पटख़ कर मार देते हैं या बा'ज़ अवक़ात मेनरोड (Main Road) पर ज़िन्दा फेंक देते हैं ताकि गाड़ियों तले कुचल जाए, येह जानवरों की बिला वज्ह ईज़ा

रसानी है। जानवरों पर भी रह़्म करना सीखिये। **याद रखिये !** जो रह़्म करता है, उस पर रह़्म किया जाता है और जो रह़्म नहीं करता, उस पर रह़्म नहीं किया जाता। "बुख़ारी शरीफ़" में ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **सय्यिदुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "مَنْ لَّا یَرْحَمُ لَا یُرْحَمُ" या'नी जो रह़्म नहीं करता, उस पर रह़्म नहीं किया जाता। (بخاری ٤ ص١٠٣ حدیث ٦٠١٣) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "रह़्म करने वालों पर रह़मान عَزَّ وَجَلَّ रह़्म फ़रमाता है, (इस लिये ऐ बन्दो !) ज़मीन वालों पर तुम रह़्म करो, तुम पर वोह रह़्म फ़रमाएगा जिस की हुकूमत आस्मान पर है।" (ترمذی ج٣ ص٣٧١ حدیث ١٩٣١)

क्या जल-परी का वुजूद है ?

सुवाल : "जल-परी" और जल-मानस या'नी दरियाई इन्सान के क्या मा'ना हैं ? आया येह ख़याली मख़्लूक़ है या इस का कोई वुजूद भी है ?

जवाब : जवाबन दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के एक मुफ़्ती साह़िब की तह़क़ीक़ चन्द अल्फ़ाज़ के रद्दो बदल के साथ पेश की जाती है : "जल-परी" या'नी "पानी की परी।" और जल-मानस या'नी दरियाई इन्सान मह़ज़ अफ़्सा-नवी किरदार हैं ता ह़ाल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

इन का कोई साइन्सी सुबूत मन्ज़रे आ़म पर नहीं आया, अलबत्ता हैवानियात पर लिखी क़दीम कुतुब में इस त़रह़ की मछलियों का ज़िक्र मिलता है कि जिन की शक्ल या बा'ज़ आ'ज़ा इन्सानों से किसी ह़द तक मिलते जुलते हैं।

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़्रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

2 जुमादल आख़िरी 1435 सि.हि.
03-04-2014

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	المواہب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
درمنثور	دارالفکر بیروت	مدارج النّبوۃ	مرکز اہلسنت برکات رضا الہند
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	کشف الخفاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	حیاۃ الحیوان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسلم	دارابن حزم بیروت	المغرب	مکتبہ اسامہ بن زید حلب
ابوداؤد	داراحیاء التراث العربی بیروت	مکاشفۃ القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
نسائی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	المبسوط	کوئٹہ
ترمذی	دارالفکر بیروت	ہدایہ	داراحیاء التراث العربی بیروت
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	بدائع الصنائع	داراحیاء التراث العربی بیروت
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	درمختار وردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
شرح صحیح مسلم	دارالوفا	عالمگیری	دارالفکر بیروت
مرقاۃ	دارالفکر بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
مراۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
صفۃ الصفوۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	عجائب الحیوانات	فرید بک اسٹال مرکز الاولیاء لاہور
الاصابہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	☆☆☆☆	☆☆☆☆

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	नर और मादा मछली में चन्द नुमायां फ़र्क़	15	मछली के तिब्बी फ़वाइद	36
चन्द अनोखी मछलियां	1	बिग़ैर गलफड़े की मछली खाना कैसा ?	16	कौन सी मछली ज़ियादा मुफ़ीद है ?	36
रअ़आ़दा (बर्क़ मछली)	2	मछली की कौन सी क़िस्म ह़राम है ?	16	क्या मछली बिल्कुल न खाना मुज़िरे सिह़्ह़त है ?	37
कलिमा लिखी हुई मछली	2	मछली के ह़लाल होने की दीगर सूरतें	16		
काफ़ी देर तक ज़िन्दा रहने वाली मछलियां	2	परिन्दे की चोंच से मछली छूट कर गिरी...	17	हफ़्ते में दो बार तो मछली खा ही लेनी चाहिये	38
				मछली के तेल के फ़वाइद	39
ज़िन्दा जज़ीरा !	3	मछली के पेट से अगर मछली निकले तो ?	17	मछली के सर के फ़वाइद	40
ज़ामोर	4	मछली के अन्डे	18	मछली के सर की यख़्नी बनाने का त़रीक़ा	41
वैल मछली	4	पानी में केमीकल के ज़रीए मछलियां मारना कैसा ?	18	मछली के सर की यख़्नी कई अमराज़ के लिये मुफ़ीद है	41
मनारा	5	केमीकल से मारी हुई मछलियां खाना कैसा ?	19		
कूक़ी	5	बम धमाके से मछलियां मारना कैसा ?	19	मछली और क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा	42
क़ातूस	6	जाल में ग़ैर मूज़ी जानवर फंस जाएं तो ?	20	केकड़ा ह़लाल है या ह़राम ?	43
दुल्फ़ीन (सोस मछली)	6	मछली की हड्डियां खा सकते हैं या नहीं ?	21	झींगा खाना कैसा ?	44
परों वाली मछली	7	मछली की खाल खाना कैसा ?	21	आ'ला ह़ज़रत ने कभी झींगा न खाया	45
मिन्शार	7	मछली पकाने का त़रीक़ा	22	झींगा खाने से कोलेस्ट्रोल में इज़ाफ़ा होता है	46
कौसज	8	सरकारे मदीना صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ने मछली खाई	23	झींगा बिग़ैर सफ़ाई किये खाना	46
ग़ाफ़िल मछली ही जाल में फंसती है	8	क़द-आवर मछली	23	छोटी मछलियां बिग़ैर आलाइश निकाले खाना	47
म-दनी मुन्नी और ग़ाफ़िल मछलियां	9	एक इश्काल और उस का जवाब	25	मछली के ज़ब्ह़ न करने की ह़िक्मत	47
ग़ाफ़िल मछलियां खाना कैसा ?	10	ह़ालते इज़्तिरार क्या है ?	26	मछली का ख़ून पाक है या नापाक ?	48
कौन कौन सा आबी जानवर ह़लाल है ?	10	अमीनुल उम्मह	27	मछली का हर जुज़ पाक है	48
मछली की ता'रीफ़	10	दिल का मरीज़ ठीक हो गया	29	सूखी मछली खाना कैसा ?	48
मछली के सिवा हर आबी जानवर ह़राम है	11	समुन्दर की फेंकी हुई मछली खाना कैसा ?	30	बासी मछली खाना कैसा ?	48
				ताज़ा और बासी मछली की पहचान	49
मछली की हज़ारों क़िस्में हैं	12	क्या ज़मीन मछली की पीठ पर है ?	32	बत़ौरे तफ़रीह़ मछली का शिकार खेलना कैसा ?	50
समुन्दरी अ़जाइबात अनगिनत हैं	12	सब से पहले नूरे मुस्त़फ़ा पैदा हुवा या क़लम ?	32		
दो मछलियों के मु-तअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत की तह़क़ीक़े अनीक़	13	क़लम के बारे में वज़ाह़त	34	तफ़रीह़न किये गए शिकार का खाना कैसा ?	51
ह़िकायत	14	जन्नत की सब से पहली ग़िज़ा	35	मछली के शिकार के दर्दनाक मनाज़िर	52
जिरींस के मु-तअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल	14	मछली बोल नहीं सकती इस की अ़जीबो ग़रीब ह़िक्मत	36	क्या जल-परी का वुजूद है ?	53
				मआख़िज़ो मराजेअ़	54

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ताज़ा और बासी मछली की पहचान

	आंख	गलफड़े	जिस्म व खाल
ताज़ा	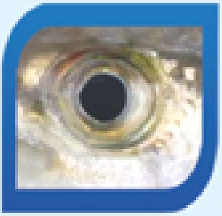		
	• आंखें उभरी हुई • पुतलियां सियाह और चमकदार • आंख की सामने की झिल्ली शफ़्फ़ाफ़	• रंग गहरा लाल	• जिल्द साफ़ और चमकदार • जिस्म मज़बूत और न दबने वाला
बासी			
	• आंखें धंसी हुई • पुतलियां ज़र्द और ख़ाकी • आंख की झिल्ली धुंधला सफ़ेद और ज़र्द	• रंग का भूरा हो या पीला पड़ जाना • बदबू ख़ारिज होना	• जिल्द बे रौनक़ • जिस्म बिल्कुल नर्म और दबने वाला

MC 1286

मक-त-बतुल मदीना

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net